Durood e Paak Ke Fazail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 318
Weekly Booklet : 318

दुरूदे पाक

के फ़ज़ाइल

सफ़हात 21

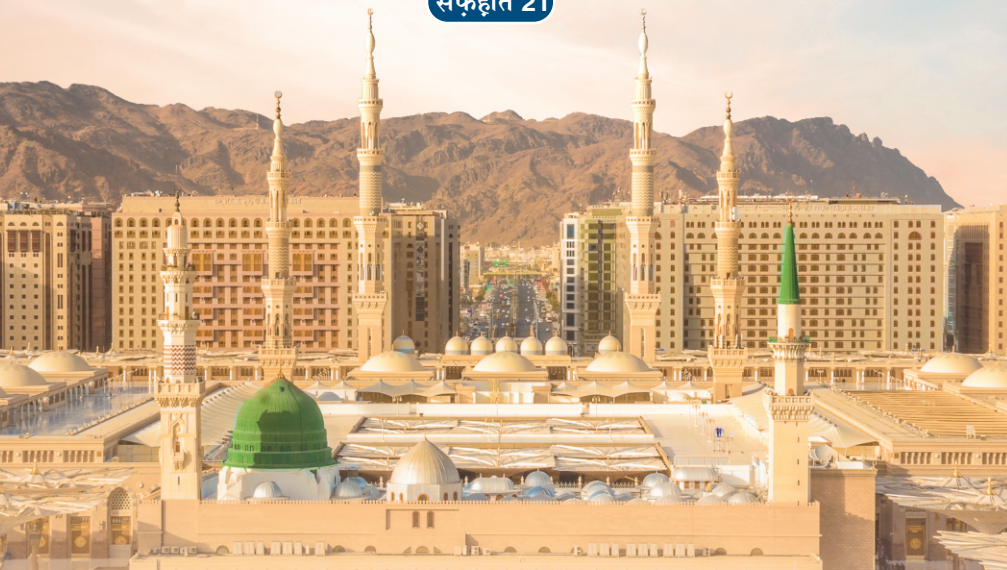

- सेब से बड़ा अनार से छोटा फल 05
- अहले सुन्नत की एक निशानी 08
- बुरी शक्ल से नजात 12
- एक ताजिर का वाक़िआ़ 15

पेशकश :
अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल**

सिने त़बाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1445** हि., सितम्बर **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **''दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल''** पढ़ या सुन ले उसे कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ दे और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

(مسلم، ص172، حدیث:912)

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह रस्साअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रह़मत इन्आ़म को कहते हैं, (इस रिवायत का मत़लब येह है कि) **अल्लाह** पाक दुन्या व आख़िरत में बन्दे को मुसल्सल इन्आ़मात से नवाज़ता है । क़ाज़ी अबू अ़ब्दुल्लाह सक्काकी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम की ''एक रह़मत'' दुन्या और जो कुछ दुन्या में है उस से बेहतर है तो तुम उस के बारे में क्या गुमान करते हो जिसे **अल्लाह** करीम दस रह़मतों से नवाज़े, **अल्लाह** पाक दस रह़मतों से उस बन्दे से कितनी आफ़तें, मुसीबतें दूर फ़रमाएगा और उन दस रह़मतों से कितनी बरकतें ह़ासिल होंगी । शैख़ अबू अ़त़ाउल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम जिस पर एक रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा वोह उस की दुन्या व आख़िरत के सब मुआ़मलात में किफ़ायत

करेगी तो जिस पर दस रह़मतें नाज़िल हों उस का क्या आ़लम होगा ?

(مطالع المسرات، ص30)

रह़मत दा दरिया इलाही हर दम वगदा तेरा जे इक क़त़रा बख़्शे मेनूं कम बन जावे मेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रोज़े जुमुआ़ दुरूद

अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है, इसी दिन ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह पैदा हुए, इसी में इन की रूह़े मुबारका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन हलाकत त़ारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : " **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?" इर्शाद फ़रमाया कि "**अल्लाह** पाक ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अज्साम को ज़मीन पर खाना ह़राम फ़रमाया है ।"

(ابوداود، 1/391، حدیث:1047)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पुल सिरात़ पर नूर

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मेरे ऊपर दुरूद पुल सिरात़ के लिये नूर है, जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन अस्सी मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** पाक उस के अस्सी साल के गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है ।

(جامع صغیر، ص320، حدیث:5191)

जुमुआ़ के दिन हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो जुमुआ़ के दिन मुझ पर हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले। (الترغیب والترہیب، 2/328، حدیث:22)

चेहरा रोशन हो गया

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने त़वाफ़े का'बा करते हुए एक ऐसे जवान को देखा जो क़दम क़दम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ रहा था। सुफ़्यान सौरी कहते हैं : मैं ने कहा : ऐ जवान ! तुम तस्बीह़ो तह्लील (سُبْحٰنَ اللّٰه और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ) छोड़ कर सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ ही पढ़ रहे हो, क्या इस की कोई ख़ास वज्ह है ? जवान ने पूछा : आप कौन हैं ? मैं ने जवाब दिया : सुफ़्यान सौरी। उस ने कहा : अगर आप का शुमार **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों में न होता तो मैं कभी भी आप को येह राज़ न बताता ! हुवा यूं कि मैं अपने बाप के हमराह ह़ज के इरादे से निकला, रास्ते में एक जगह मेरा बाप सख़्त बीमार हो गया, मैं ने बहुत कोशिश की मगर उसे मौत से न बचा सका, मौत के बा'द उन का चेहरा सियाह हो गया, मैं ने ''قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ कर उन का चेहरा ढक दिया, इसी ग़म की कैफ़िय्यत में मेरी आंखें भारी हो गईं और मुझे नींद आ गई। मैं ने ख़्वाब में एक ऐसे ह़सीन को देखा जो ह़ुस्न में बे मिसाल था, उस का लिबास निहायत साफ़ सुथरा था और उस के पाकीज़ा जिस्म से ख़ुश्बू की लहरें उठ रही थीं, वोह नाज़ के साथ चलता हुवा आया और मेरे बाप के चेहरे से कपड़ा हटा कर हाथ से चेहरे की त़रफ़ इशारा किया, मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो गया। जब वोह वापस तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं ने दामन थाम कर अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक ने आप के त़ुफ़ैल इस ग़रीबुल वत़नी में मेरे बाप की आबरू रख ली, आप कौन हैं ?

उन्हों ने फ़रमाया : तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं साहिबे क़ुरआन, **अल्लाह** का नबी मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूं (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), तेरा बाप अगर्चे बहुत गुनहगार था मगर मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता था, जब इस पर मुसीबत नाज़िल हो गई तो इस ने मुझ से मदद त़लब की और मैं हर उस शख़्स का जो मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता है, फ़रियाद रस (फ़रियाद सुनने वाला) हूं। जवान ने कहा : इस के बा'द अचानक मेरी आंख खुल गई, मैं ने देखा मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो चुका था।

(تفسیر روح البیان، پ22، الاحزاب، تحت الآیۃ:56، 7/225 بتغیر قلیل)

दुरूदे पाक के मक़ासिद व फ़वाइद

ह़ज़रते ह़लीमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 403 हि.) फ़रमाते हैं : "दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का एक मक़्सद तो येह है कि **अल्लाह** पाक का हुक्म बजा लाते हुए उस का क़ुर्ब ह़ासिल किया जाए और दूसरा येह कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हम पर जो ह़क़ है उसे अदा किया जाए।"

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 660 हि.) ने भी इन की इत्तिबाअ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "हमारा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजना इन के लिये क़त़्अ़न किसी क़िस्म की सिफ़ारिश का बाइ़स नहीं बनता क्यूं कि हम जैसे इन्सान उन जैसी हस्ती की शफ़ाअ़त कैसे कर सकते हैं ? अलबत्ता ! **अल्लाह** पाक ने हमें हुक्म दिया है कि हम अपने मोह़सिने आ'ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात का बदला दें और अगर ऐसा न कर सकें तो उन के ह़क़ में दुआ़ करें। पस **अल्लाह** पाक ने हमारी ह़ालत के पेशे नज़र कि हम अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात का बदला देने

से आ़जिज़ हैं तो हमें उन पर दुरूदे पाक भेजने की ता'लीम फ़रमाई।'' ह़ज़रते शैख़ अबू मुह़म्मद मरजानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से भी कुछ इसी त़रह़ का कलाम मन्क़ूल है।

ह़ज़रते क़ाज़ी अबू बक्र इब्नुल अ़रबी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 543 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाएदा ख़ुद पढ़ने वाले को होता है क्यूं कि येह बात अच्छे अ़क़ीदे, ख़ालिस निय्यत, इज़्हारे मह़ब्बत, हमेशा फ़रमां बरदार रहने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वासित़ए मुबारका को मोह़तरम जानने पर रहनुमाई करती है।'' (المواہب اللدنیۃ للقسطلانی، 2/504 تا 506)

ह़ज़रते अबुल मवाहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा तो आप ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त करोगे।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस क़ाबिल कैसे हुवा ? तो इर्शाद फ़रमाया : ''इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर उस का सवाब मुझे भेज देते हो।'' (الطبقات للشعرانی، رقم:318، 2/101)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स ह़ौज़े कौसर से भरा पियाला पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ وَاَنْصَارِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ وَمُحِبِّيْهِ وَاُمَّتِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔ (الشفا، جزء ثانی، ص72)

सेब से बड़ा अनार से छोटा फल

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** करीम ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है, जिस का फल

सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख्खन से नर्म, शह्द से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। उस दरख़्त की शाख़ें मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बर जद के हैं। उस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा। (الحاوی للفتاوی، 2/48)

जन्नत फैल जाती है

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की एक बरकत येह है कि अत़राफ़े जन्नत में रहने वाले फ़िरिश्ते जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो जन्नत कुशादा हो जाती है। (الابریز، 2/338)

हर मुसीबत में मदद

ह़ज़रते अबू बक्र शिबली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्ह़ूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होलनाकियों से दोचार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : "दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।" अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े। इतने में एक साह़िब जो ह़ुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र थे, वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान ह़ाइल हो गए। और उन्हों ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ?

फ़रमाया : "तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मुक़र्रर किया गया है।"

(القول البدیع، ص260)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कस्रते दुरूद शरीफ़ की बरकत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिश्ता आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुछ बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा

रोशन मेरी तुर्बत को लिलाह शहा करना जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़त़ा करना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आ़शिक़े दुरूदो सलाम का मक़ाम

ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक रोज़ बग़दाद शरीफ़ के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि ह़ज़रते अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बारगाहे

रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! शिबली पर इस क़दर शफ़्क़त की वज्ह ? **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

﴿ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴾

(پ11، التوبہ:128) और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (القول البدیع، ص346 بتغیر قلیل)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक दीनी भाई था, मरने के बा'द उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। मैं ने पूछा : किस अ़मल के सबब ? कहने लगा : मैं ह़दीस लिखता था, जब भी शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर आता मैं सवाब की निय्यत से "صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" लिखता, इसी अ़मल की बरकत से मेरी मग़्फ़िरत हो गई। (القول البدیع، ص463)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मालिके जन्नत, साक़िये कौसर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़ली निशान है : "لَيَرِدَنَّ الْحَوْضَ عَلَيَّ اَقْوَامٌ مَّا اَعْرِفُهُمْ اِلَّا بِكَثْرَةِ الصَّلَاةِ عَلَيَّ" या'नी ह़ौज़े कौसर पर कुछ लोग मेरे पास आएंगे जिन्हें मैं कस्रते दुरूद के सबब पहचान लूंगा।"

(القول البدیع، ص264)

अहले सुन्नत की एक निशानी

ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُم

फ़रमाते हैं : عَلَامَۃُ اَھلِ السُّنَّۃِ کَثْرَۃُ الصَّلَاۃِ عَلٰی رَسُوْلِ اللہ या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद पढ़ना अहले सुन्नत की निशानी है। (القول البدیع، ص131)

दर्द और सूजन ख़त्म हो गई

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं "ह़म्माम" में गया तो गिर गया, दर्द की वज्ह से हाथ सूज गया, रात को इसी तक्लीफ़ में (दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते) सो गया, ख़्वाब में प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने इल्तिजा करते हुए कहा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो आप ने मुझ से फ़रमाया : मेरे बेटे ! (ह़ालते तक्लीफ़ में) तेरे दुरूद (पढ़ने) ने मुझे बेचैन कर दिया। जब सुब्ह़ हुई तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से दर्द और सूजन का नामो निशान तक न था। (القول البدیع، ص328 ملتقطا)

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी आई

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! क्या तुम चाहते हो कि जिस क़दर तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान के, तुम्हारे ख़यालात तुम्हारे दिल के, तुम्हारी रूह़ तुम्हारे बदन के, तुम्हारी बीनाई का नूर तुम्हारी आंख के क़रीब है, मैं इस से भी ज़ियादा तुम्हारे क़रीब हो जाऊं ? अ़र्ज़ किया, हां ! फ़रमाया : फिर मुह़म्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ भेजो। (حلیۃ الاولیاء، 6/33، رقم:7716)

नूह़ो ख़लीलो मूसा व ईसा सब का है आक़ा नामे मुह़म्मद
पाईं मुरादें दोनों जहां में जिस ने पुकारा नामे मुह़म्मद
दोनों जहां में दुन्या व दीं में है इक वसीला नामे मुह़म्मद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी किताब "शर्हुस्सुदूर" में लिखते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में फ़ौत होने वाले के पास येह कहा जाता था : ऐ **अल्लाह** पाक ! फ़ुलां बिन फ़ुलां की मग़्फ़िरत फ़रमा, इस की क़ब्र को ठन्डी और वसीअ़ कर दे, मरने के बा'द इसे चैन अ़त़ा फ़रमा, प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब कर, इसे दोस्त रख और इस की रूह़ को नेकों की अरवाह़ की त़रफ़ बुलन्द फ़रमा, हमें इस के साथ ऐसे घर में जम्अ़ फ़रमा जिस में सिह़्ह़त बाक़ी रहे, दुख और थकावट दूर हो। नीज़ बारगाहे रिसालत में मुसल्सल दुरूद पढ़ा जाता, यहां तक कि उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाती। (شرح الصدور، ص37)

किताब में दुरूदे पाक लिखने की बरकत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ सूफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मरवी है कि एक मुह़द्दिस को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? कहा : अपनी किताबों में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखने के सबब। (تاریخ ابن عساکر، 54/113، رقم:6646)

दुरूदे पाक की बरकत

ह़ज़रते ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है कि ह़ज़रते अबू ज़ुरआ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह आस्मान में फ़िरिश्तों के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं ने कहा : इस बुलन्द रुत्बे तक कैसे पहुंचे ? फ़रमाया : मैं ने अपने हाथ से एक लाख अह़ादीसे मुबारका लिखी हैं और मैं ने उन सब में दुरूदे पाक पढ़ा है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : **مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا**

या'नी जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है, **अल्लाह** पाक उस के बदले उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (تاریخ بغداد، 10/334، رقم:5469)

मय्यित को ख़्वाब में देखने का अ़मल

एक औ़रत ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुई और कहने लगी : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, मैं चाहती हूं कि उसे ख़्वाब में देख लूं, कोई ऐसी दुआ़ बतलाइये जिस से मेरी मुराद पूरी हो जाए। आप ने उसे एक दुआ़ सिखलाई। उस औ़रत ने रात में वोह दुआ़ पढ़ी और अपनी बेटी को ख़्वाब में देखा तो उस का ह़ाल येह था कि उस ने जहन्नम के तारकोल (डामर) का लिबास पहन रखा था, उस के हाथों में ज़न्जीरें और पाउं में बेड़ियां (कड़ियां) थीं। औ़रत ने दूसरे दिन येह ख़्वाब आप को सुनाया, आप बहुत ग़मगीन हुए। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस लड़की को जन्नत में देखा, उस के सर पर ताज था, वोह आप से कहने लगी : आप मुझे पहचानते हैं ? मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं जो आप के पास आई थी और मेरी तबाह ह़ालत आप को बतलाई थी। आप ने उस से पूछा : तेरी ह़ालत में येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? लड़की ने कहा : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक सालेह़ (नेक) शख़्स गुज़रा और उस ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद पढ़ने की बरकत से **अल्लाह** पाक ने हम पांच सो क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया। (مکاشفۃ القلوب، ص24)

नुक्ता : ग़ौर का मक़ाम है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक शख़्स के दुरूद भेजने की बरकत से इतने ज़ियादा लोग बख़्शे गए, क्या वोह शख़्स जो पचास साल से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज रहा हो, क़ियामत में उस की मग़्फ़िरत नहीं होगी ! (مکاشفۃ القلوب، ص24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जिस्म व रूह़ की सलामती

किसी अ़क़्ल मन्द का क़ौल है कि जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह़ की बक़ा कम गुनाहों में है और ईमान की सलामती हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलातो सलाम पढ़ने में है। (مکاشفۃ القلوب، ص9)

बुरी शक्ल से नजात

कहते हैं कि एक आदमी ने जंगल में एक बुरी शक्ल को देख कर पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : मैं तेरा बुरा अ़मल हूं। उस आदमी ने पूछा : तुझ से नजात की भी कोई सूरत है ? उस ने जवाब दिया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना। (مکاشفۃ القلوب، ص30)

दुरूद न भेजने वाले से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ए'राज़

एक आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजता था, एक रात उस ने ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, आप ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस आदमी ने अ़र्ज़ किया कि क्या हुज़ूर मुझ से नाराज़ हैं इस लिये तवज्जोह नहीं फ़रमाई ? आप ने जवाब दिया : नहीं ! मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं हूं, अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर मुझे कैसे नहीं पहचानते ह़ालां कि उ़लमा कहते हैं कि आप अपने उम्मतियों को उन की मां से भी ज़ियादा पहचानते हैं। आप ने फ़रमाया : उ़लमा ने सच कहा है लेकिन तू ने मुझे दुरूद भेज कर अपनी याद नहीं दिलाई, मेरा कोई उम्मती मुझ पर जितना दुरूद भेजता है मैं उसे उतना ही पहचानता हूं। उस शख़्स के दिल में येह बात बैठ गई और उस ने रोज़ाना एक सो मरतबा दुरूद पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। कुछ मुद्दत बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से फिर ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा, आप ने फ़रमाया : मैं अब तुझे पहचानता हूं और मैं तेरी शफ़ाअ़त करूंगा। (مکاشفۃ القلوب، ص30)

दरिन्दे से नजात कैसे मिली ?

ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली शाज़िली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक जंगल में थे कि अचानक उन के सामने एक दरिन्दा (वह़शी जानवर) आ गया, उन को अपनी जान की फ़िक्र पड़ गई, पस उन्हों ने ख़ौफ़ज़दा हो कर नबिय्ये करीम (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़ाते मुक़द्दसा पर दुरूदो सलाम पढ़ना शुरूअ़ कर दिया जिस की बरकत से आप को उस दरिन्दे से नजात मिली और आप की जान बच गई। (سعادۃ الدارین، ص152)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ عَنْه अपने भाई ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ عَنْه से मुलाक़ात के लिये गए, वोह बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे थे, (ख़ुशी की वज्ह पूछी गई तो) बताया कि आज रात मैं ख़्वाब में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा, आप ने मुझे एक डोल (या'नी बरतन) अ़त़ा फ़रमाया, जिस में पानी था, मैं ने पेट भर कर पिया, जिस की ठन्डक अभी तक महसूस कर रहा हूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه ने पूछा : आप को येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा ? फ़रमाया : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वज्ह से। (سعادۃ الدارین، ص149)

दुरूदो सलाम पढ़ने की बरकत

अबू अ़रूबा अल ह़रासी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मा'मूल था कि आप के सामने जब कोई अह़ादीस पढ़ता तो आप दुरूदो सलाम पढ़े बिग़ैर न रहते और ख़ूब ज़ाहिर कर के पढ़ते और कहा करते कि ह़दीस शरीफ़ पढ़ने की एक बरकत येह है कि दुन्या में कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की सआ़दत मिलती है और आख़िरत में اِنْ شَآءَاللهُ जन्नत की ने'मतें मिलेंगी।

(سعادۃ الدارین، ص198)

कस्रते दुरूद ने हलाकत से बचा लिया (वाक़िआ)

हज़रते शैख़ हुसैन बिन अहमद कव्वाज़ बिसाती رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** पाक से येह दुआ की, कि (**या अल्लाह** पाक !) मैं ख़्वाब में अबू सालेह मुअज़्ज़िन رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ को देखना चाहता हूं। (मेरी दुआ मक़्बूल हुई और) मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी हालत में देख कर पूछा : ऐ अबू सालेह ! आप कैसे हैं ? फ़रमाया : ऐ अबुल हसन ! अगर सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती तो मैं हलाक (या'नी बरबाद) हो गया होता। (سعادت الدارین، ص136)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद   बार बार और बे शुमार दुरूद
बैठते उठते जागते सोते   हो इलाही ! मेरा शिआर दुरूद

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर दर्द की दवा

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ बीमार हो गए, बहुत इलाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी हालत में छे महीने गुज़र गए। एक दिन उन्हें पता चला कि हज़रते शैख़ शिबली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ महल के पास से गुज़र रहे हैं तो ख़लीफ़ा ने उन्हें अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। जब आप तशरीफ़ लाए तो ख़लीफ़ा को देख कर इर्शाद फ़रमाया : फ़िक्र न करो, **अल्लाह** पाक की रहमत से आज ही आराम आ जाएगा। फिर आप ने दुरूदे पाक पढ़ कर ख़लीफ़ा के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गए। (राहतुल कुलूब (फ़ारसी), स. 50)

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد   ता'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

एक ताजिर का वाक़िआ़

एक ताजिर बड़ा ख़ुशहाल था, कारोबार ठीकठाक चल रहा था, पैसों की रेलपेल थी, फिर वक़्त ने अंगड़ाई ली, उस ताजिर के माली हालात ख़राब होने लगे, कारोबार में नुक़्सान होते होते नौबत यहां तक आ पहुंची कि उस का कारोबार बिल्कुल ख़त्म हो गया और वोह बेचारा बिल्कुल मोहताज हो कर रह गया। उस ने किसी दोस्त से तीन हज़ार (3000) (सोने के सिक्के) क़र्ज़ लिया था और वापसी की तारीख़ मुक़र्रर थी, क़र्ज़ ख़्वाह ने मुक़र्ररा तारीख़ पर क़र्ज़ की वापसी का मुतालबा किया, इस बेचारे ने मा'ज़िरत चाही कि भाई मैं मजबूर हूं, मेरे पास कोई चीज़ नहीं है। क़र्ज़ ख़्वाह ने क़ाज़ी के पास जा कर मुक़द्दमा दर्ज करवा दिया। क़ाज़ी साहिब ने उस मक़्रूज़ ताजिर को तलब किया और मुक़द्दमे की बा क़ाइदा समाअ़त के बा'द उस मक़्रूज़ ताजिर को एक माह की मोहलत दी और ताकीद की, कि इस मुद्दत में ज़रूर क़र्ज़ की वापसी का इन्तिज़ाम कर लो। वोह मक़्रूज़ ताजिर बड़ा परेशान हुवा, सोचने लगा कि क्या करूं ? मुम्किन है कि उस ने कहीं पढ़ा हो या उ़लमा से सुना हो कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है : जिस बन्दे पर कोई मुसीबत, कोई परेशानी आ जाए तो वोह मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करे, क्यूं कि दुरूदे पाक मुसीबतों और परेशानियों को ले जाता है और रिज़्क़ बढ़ाता है। अल हासिल उस ने आ़जिज़ी के साथ मस्जिद के गोशे (एक कोने) में बैठ कर दुरूदे पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। जब सत्ताईस (27) दिन गुज़र गए तो उसे रात को एक ख़्वाब दिखाई दिया, कोई कहने वाला कहता है : ऐ बन्दे ! तू परेशान न हो, **अल्लाह** करीम बड़ा कारसाज़ (काम बनाने वाला) है, तेरा क़र्ज़ अदा हो जाएगा। तू अ़ली बिन

ईसा वज़ीरे सल्तनत के पास जा और जा कर उसे कह दे कि क़र्ज़ अदा करने के लिये मुझे तीन हज़ार (3000) दीनार दे दे। वोह मक़रूज़ ताजिर कहता है कि मैं जब बेदार हुवा तो बड़ा ख़ुश था, परेशानी ख़त्म हो चुकी थी, लेकिन फिर येह ख़याल भी आया कि अगर वज़ीर साहिब कोई दलील या निशानी त़लब करेंगे तो मेरे पास कोई दलील नहीं है। येही सोचते हुए दूसरी रात आ गई जब मैं सोया तो क़िस्मत जाग उठी, मुझे आक़ाए दो जहां, रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अ़ली बिन ईसा वज़ीर के पास जाने का इर्शाद फ़रमाया। जब आंख खुली तो ख़ुशी की इन्तिहा न थी, तीसरी रात फिर उम्मत के वाली صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते हैं और फिर हुक्म फ़रमाते हैं कि वज़ीर अ़ली बिन ईसा के पास जाओ और उसे येह फ़रमान सुना दो। अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई निशानी या दलील इर्शाद फ़रमा दीजिये जो मैं उस वज़ीर को बताऊं। येह सुन कर मंगतों की झोलियां भरने वाले दाता, सख़ावत के दरिया बहाने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर वज़ीर तुझ से कोई अ़लामत पूछे तो कह देना कि तुम नमाज़े फ़ज्र के बा'द किसी के साथ बात करने से पहले **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर पांच हज़ार (5000) बार दुरूदे पाक पढ़ते हो, जिसे **अल्लाह** करीम और किरामन कातिबीन के सिवा कोई नहीं जानता। येह फ़रमा कर सय्यिदे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए। मैं बेदार हुवा, नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से बाहर क़दम रखा, ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि आज मोहलत को मुकम्मल एक माह गुज़र चुका था। मैं वज़ीर साहिब की रिहाइश गाह पर पहुंचा और वज़ीर साहिब से सारा क़िस्सा कह सुनाया, जब

वज़ीर साहिब ने कोई निशानी मांगी और मैं ने आक़ा करीम, रसूले अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुनाया तो वज़ीर साहिब ख़ुशी व मसर्रत से झूम उठे, वोह घर के अन्दर गए और नव हज़ार (9000) दीनार ले कर आ गए, उन में से तीन हज़ार (3000) गिन कर मेरी झोली में डाल दिये और कहा : येह तीन हज़ार (3000) क़र्ज़ की अदाएगी के लिये हैं, फिर तीन हज़ार (3000) और दिये और कहा : येह तेरे बाल बच्चों के ख़र्चे के लिये हैं। फिर तीन हज़ार (3000) और दिये और कहा : येह तेरे कारोबार के लिये हैं। जब मुझे रुख़्सत करने लगे तो क़सम दे कर कहा : ऐ भाई ! तू मेरा दीनी और ईमानी भाई है, ख़ुदारा ! येह महब्बत वाला तअ़ल्लुक़ न तोड़ना और जब भी कोई काम हो, किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बिला रोकटोक आ जाना, मैं आप का मस्अला दिलो जान से ह़ल कर दिया करूंगा। उस शख़्स का बयान है कि मैं वोह रक़म ले कर सीधा क़ाज़ी साहिब की अ़दालत में पहुंच गया और जब फ़रीक़ैन को बुलाया गया तो मैं आगे बढ़ा और मैं ने तीन हज़ार (3000) दीनार गिन कर क़ाज़ी साहिब के सामने रख दिये। अब क़ाज़ी साहिब ने सुवाल कर दिया कि बता तू येह इतनी सारी रक़म कहां से ले कर आया है ? ह़ालां कि तू तो मुफ़्लिस और कंगाल था। मैं ने सारा वाकिआ़ बयान कर दिया, क़ाज़ी साहिब ने येह सुना तो ख़ामोश हो गए, फिर उठ कर अपने घर गए और घर से तीन हज़ार (3000) दीनार ले कर आ गए और कहने लगे : सारी बरकतें वज़ीर साहिब ने ही क्यूं लूट लीं, मैं भी उसी दर का ग़ुलाम हूं, तेरा येह तमाम क़र्ज़ा मैं अपनी जेब से अदा करता हूं। जब क़र्ज़ ख़्वाह ने येह माजरा देखा तो वोह कहने लगा कि सारी रह़मतें तुम लोग

ही क्यूं समेट लो, मैं भी उन की रह़मत का ह़क़दार हूं। येह कह कर उस ने तह़रीरी त़ौर पर लिख कर दे दिया कि मैं **अल्लाह** करीम और उस के रसूले अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये इस बन्दे का क़र्ज़ मुआ़फ़ करता हूं। येह देख कर उस मक़्रूज़ ताजिर ने क़ाज़ी साह़िब से कहा : जनाब आप का बहुत शुक्रिय्या। आप अपनी रक़म संभाल लीजिये, अब मुझे इस की ज़रूरत नहीं रही। तो क़ाज़ी साह़िब कहने लगे : मैं **अल्लाह** और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में जो दीनार लाया हूं वोह वापस लेने को हरगिज़ तय्यार नहीं हूं, येह आप का है, आप इसे ले जाएं। वोह साह़िब कहते हैं : मैं जो पहले क़र्ज़े में जकड़ा हुवा था अब वोह बारह हज़ार (12000) दीनार ले कर घर आ गया, मेरा क़र्ज़ा भी मुआ़फ़ हो गया, घर के लिये अख़्राजात भी मिल गए और कारोबार करने के लिये भी अच्छी ख़ासी रक़म मिल गई। येह सारी बरकतें दुरूदे पाक पढ़ने की वज्ह से ज़ाहिर हो गईं। (جذب القلوب، ص237, तारीख़े मदीना (मुतर्जम), स. 335)

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली मुश्किल कुश़ा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बरकाते दुरूदे पाक

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ❀ दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं... ❀ बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल होती है... ❀ ख़ौफ़ दूर होता है... ❀ ज़ुल्म से नजात ह़ासिल होती है... ❀ दुश्मनों पर फ़त्ह़ ह़ासिल होती है... ❀... दिल में आप की मह़ब्बत पैदा होती है और **अल्लाह** की रिज़ा ह़ासिल होती है... ❀ फ़िरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं... ❀ दिलो जान, अस्बाब व माल की पाकीज़गी ह़ासिल होती है...

❀ बरकतें ह़ासिल होती हैं... ❀ औलाद दर औलाद चार नस्लों तक बरकत रहती है... ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की होलनाकियों से नजात ह़ासिल होती है... ❀ सकराते मौत में आसानी होती है... ❀ दुन्या की तबाह कारियों से नजात मिलती है... ❀ तंगदस्ती दूर होती है... ❀ भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं... ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला जब पुल सिरात़ से गुज़रेगा तो नूर फैल जाएगा और वोह साबित क़दम हो कर पलक झपक्ने में नजात पा जाएगा... ❀ अ़ज़ीम तर सआ़दत येह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का नाम हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया जाता है... ❀ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ती है... ❀ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ूबियां और अच्छाइयां दिल में घर कर जाती हैं... ❀ कस्रते दुरूद शरीफ़ से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर ज़ेह्न में क़ाइम हो जाता है... ❀ ख़ुश नसीबों को दरजए क़ुर्बते मुस्त़फ़वी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ासिल हो जाता है... ❀ ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदारे फ़ैज़ आसार नसीब होता है... ❀ रोज़े क़ियामत मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़े की सआ़दत नसीब होगी... ❀ फ़िरिश्ते मरह़बा कहते हैं और मह़ब्बत रखते हैं... ❀ फ़िरिश्ते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्तियों पर लिखते और उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं... ❀ फ़िरिश्तगाने सय्याह़ीन (ज़मीन पर सैर करने वाले फ़िरिश्ते) उस के दुरूद शरीफ़ को मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाले और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं। (جذب القلوب، ص229 ملخصًا, तारीख़े मदीना (मुतर्जम), स. 326 मुलख़्ख़सन)